प्रवासी साहित्यकार उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में नारी का आधुनिक रूप

- Rachana P. Vishnuswami
Department of Hindi
Saurashtra Universitv. Raikot

प्रस्तावना :

'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता:' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक परिवार, समाज, राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक ढांचे को सुदृढ़ता प्रदान करने में महिलाएँ पुरुषों की तुलना में बराबर की भूमिका निभाती रही है। "नारी एक ऐसा शब्द है जिसमें 'नर' छिपा होता है 'नर' अर्थात् नारायण का एक स्वरूप । पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के 24 अवतार में 'नर-नारायण का अवतार चौथा माना गया है।' कथा के अनुसार यह अवतार आज भी बद्रीकाश्रम में निवास करता है।"[1]

आज के वैज्ञानिक, यांत्रिक और ठोस बौद्धिकता के कारण मानसिक स्तर से लेकर ठोस भौतिक स्तरों तक सभी प्रकार के मूल्यों में इतनी तीव्र गति से अंतर आ रहा है कि आज हम भविष्य को लेकर कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकते कि यह परिवर्तन चक्र कहाँ जाकर रूकेगा। एक ओर हम अंधविश्वास, रूढ़िगत मान्यताएँ, अंधश्रद्धा की बेड़ियों से बहार निकलकर नए सिरे से जीवन जीने लगे हैं, तो दूसरी ओर इन्हीं सब कारणों से आज सहज हृदय की भावनाएँ बहुत पीछे छूटने लगी है। मानवीय सम्बन्धों और मूल्यों पर भी सीधी असर पड़ रही है। आधुनिकता के चलते इंसान ने स्थापित मूल्यों के प्रति विद्रोह कर दिया है। कमलेश्वर के अनुसार "मेरे हिसाब से आधुनिकता की सबसे बड़ी शुरुआत यहाँ से होती है। जहाँ सबसे पहले स्थापित मान्यताओं और धारणाओं से क्वेश्चन करना शुरू करते हैं।"[2]

परिचय :

उषा प्रियम्वदा को शिक्षण जगत में उषा निल्सन के नाम से जाना जाता है। दक्षिण एशियाई अध्ययन के क्षेत्र में प्रतिष्ठित हस्ती है। भारत में जन्मी और विस्कोन्सिन विश्वविद्यालय, मैडिसिन में एक एक एमेरीय प्रोफेसर हैं। उषा जी ने साहित्य और शिक्षा जगत में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उपन्यास और लघुकथाओं सहित हिन्दी साहित्य के विभिन्न रूपों में फैला हुआ है और उन्होंने हिन्दी और अँग्रेजी भाषाओं के बीच अंतर को मिटाते हुए एक अनुवादक के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

उषा प्रियम्वदा ने उपन्यासों और लघुकथाओं की एक समृद्ध विरासत को पीछे छोड़ते हुए हिन्दी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण जगह बनाई है। उषा जी की साहित्य लेखन की यात्रा 1960 के दशक में शुरू हुई थी। उस समय भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल का दौर था और उनका इस युग की जटिल भावनाओं और परिवर्तनों को दर्शाता है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी का आधुनिक रूप :

स्वतन्त्रता के बाद भारतीय नारी नवजागरण तथा आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई है। 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास की उच्च मध्यमवर्गीय नायिका अपने अस्तित्व एवं स्वतन्त्रता की खोज में भटकती रहती है, माता की मृत्यु के बाद पिताजी उसे बड़े प्यार से बड़ा करते हैं। जब राधिका विवाह योग्य हो जाती है, उस समय उसके पिताजी विद्या नामक युवती से पुनर्विवाह करते है। विमाता के आगमन से राधिका बहुत दु:खी होती है। पिता के पुनर्विवाह पर राधिका अपने अस्तित्व को घर में निरर्थक समझती है। अपने पिता का विमाता की ओर आकर्षित होना उसे अच्छा नहीं लगता था, अब तक पिता पर अकेली राधिका का एकाधिकार था, किन्तु अब विमाता के आगमन से यह अधिकार समाप्त हो जाएगा, इस भय से राधिका पलायन करके अपने वैयक्तिक अस्तित्व का बोध करती है। पिताजी राधिका को पास रहने के लिए आग्रह करते है, परंतु राधिका अब वहाँ रहना नहीं चाहती। राधिका अपने निर्णय लेने में सक्षम है तथा अपने

ऊपर थोपे गए किसी भी प्रकार के निर्णय को अस्वीकार करती है। एक आधुनिक व शिक्षित स्त्री के रूप में सदियों से चल रही तमाम मान्यताओं को तोड़ते हुए जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण अपनाती है। विवाह का बंधन राधिका को स्वीकार नहीं था, भारत लौटने पर राधिका मनीष और अक्षय के संपर्क में आती है। मनीष ने राधिका के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा तो राधिका ने उस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। वो मनीष को कहती है कि "तुम बार-वार विवाह की बात क्यों छेड़ देते हो, मैं अभी विवाह के मूड में नहीं हूँ।"[3] राधिका के संबंध में उषा जी स्वयं कहती है, "राधिका की यात्रा एक नदी का प्रवाह है, उसे आगे ही जाना है।"[4]

'अंतर्वशी' उपन्यास की वाना सहज एवं स्वाभाविक इच्छाओं के साथ सम्पन्न जीवन जीने और सभी सुखों का आनंद उठाती है। शादी के बाद वह अपने पति शिवेश के बच्चों की माँ बनती है। एक वात्सल्यमयी माँ बनकर सुखी होती है। वो घर में सबका ध्यान रखती है। वाना को उसके जीवन के अभाव खलने लगते हैं। पति और बच्चों के बीच उसका अस्तित्व नगण्य है। उसके भीतर कई सवाल उमड़ने लगते है, "कौन हूँ मैं? क्या पत्नी, माँ के परे भी कोई पहचान होती है।"[5] उसके बाद वाना के जीवन में सारिका नाम की एक लड़की आती है। सारिका की योग्यता और प्रगीतशील विचार वाना के जीवन में नई स्फूर्ति पैदा कर देते है। वह वाना को आगे पढ़ाने की और आत्मनिर्भर बनाने की प्रवृत्ति करती है। सारिका की बातों का असर वना पर गर्म लोहे पर हथोड़े का काम करता है। जीवन में आगे बढ़ने और अमरीकी जीवन की सभी लालसाओं की पूर्ति के लिए वह आगे पढ़ती है और ड्राइविंग सीखती है, सेक्रेटरी का कोर्स करती है और मकान बेचनेवाली एजेंसी में काम करती है। शिवेश के कोकीन की तस्करी में फँसने पर स्वयं घर की जिम्मेदारी भी उठाती है।

'अंतर्वशी' की अजी विदेश पहुँचकर संघर्षपूर्ण स्थितियों में समझौता कर आत्मविश्वास के साथ जीने वाली नारी है। अपनी अकेली जिंदगी के संघर्षों के बारे में सोचकर वह व्यक्ति हो जाती है। इसलिए वाना से कहती है "जिंदगी में कुछ सुख पाने का मेरा भी हक बनना है वाना।"[6] पति की बेवफाई ने उसके मन में इतनी गहरी चोट पहुँचाई थी कि उसे भूलना आसान नहीं था। इसलिए वह स्वतंत्र रहकर अपना स्वाभिमान बचाये रखना चाहती है।

'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास में एक मध्यमवर्गीय परिवार और उनकी बढ़ती आर्थिक कठिनाइयों तथा पुरुष के साथ उन्हें झेलती हुई नारी का यथार्थ चित्र दर्शाया है। नारी जो अब तक घर की चारदीवारी तक ही सीमित थी। या जो केवल पुरुष (पिता, पति, पुत्र) के लिए मात्र बोझ मानी जाती थी, वह नारी आज अपने पैरों पर खड़ी होती जा रही है और अपने परिवार का सम्पूर्ण भार स्वयं उठाती है। सुषमा एक ऐसी ही शिक्षित व आत्मनिर्भर नारी है। सुषमा के ऊपर अपने छोटे भाई-बहन, रिटायर माता-पिता की खाने-पीने व अन्य सब जिम्मेदारियाँ है। सुषमा के शांत जीवन में एक नील नाम के व्यक्ति के प्रवेश से तूफान आ जाता है। सुषमा के अंदर नील को पा लेने की चाह उभरती है, किन्तु समाज उसके सहज नारी स्वभाव के आड़े आ जाता है। परिवार के बोझ से आक्रांत सुषमा के लिए सभी का एक ही उपदेश था कि तुम तो एक समझदार लड़की हो भावुकता तुम्हें शोभा नहीं देती। उत्तरदायित्व की विवशता, पद की गरिमा, भली और समझदार लड़की बनी रहने की विवशता उसे बंदिनी बना देती है। उसकी नियति अपने कॉलेज के इन पचपन खंभों और लाल दीवारों के बीच घुट-घुटकर मरना ही है। डॉ.उषा यादव कहती हैं- "सुषमा का या यों कहें कि उसके वर्ग की लड़कियों का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि घर का आर्थिक बोझ उठाने के लिए तो समाज उन्हें स्वतन्त्रता देता है, पर जीवन के अन्य क्षेत्रों में स्वाधीनता की बात आती है, यही समाज उनके पथ में गतिअवरोधक बन जाता है। सौ-सौ रोड़े अटकाकर उनका जीवन दुर्भर कर देता है।"[7]

'शेषयात्रा' उपन्यास की अनु प्रणव द्वारा तोड़ दिए संबंध पर एक बेबुनियाद इमारत की तरह ढह जाती है। तलाक से पूर्व उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। तलाक के बाद तनु के जीवन में प्रेरणा बनकर दिव्या आयी। वो तनु को अन्याय का सामना करने की शक्ति और उसमें निर्माण

कर देती है। वह तनु को नए तरह से जिंदगी जीने के लिए प्रोत्साहित करती है। अनु के विचारों का प्रबोधन कर उसके अस्तित्व की रक्षा का बोध कराती है। दिव्या की इन बातों से प्रभावित होकर तनु अपने पति से तलाक लेने के बाद डॉक्टरी की पढ़ाई करके डॉक्टर बन जाती है। तनु पति से विमुख होकर कमजोर नहीं बनती बल्कि अपने अस्तित्व और स्वतन्त्रता की रक्षा करते हुए डॉक्टर बनकर पूरे मान सम्मान से अपना जीवन जीती है। अनु के संदर्भ में डॉ.शीला लिखती हैं- "अनु अपने समस्त सामाजिक, मानसिक ग्रंथियों से छुटकारा पाकर स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त करने कि 'शेषयात्रा' पूरी कर लेती है।"[8] अपमान और तिरस्कार की भट्टी में जलकर उसका सोया हुआ आत्मसम्मान प्रज्वलित हो जाता है। अनु के इस कायापलट को डॉ.अब्दुल जलील कहते हैं- "पुरानी परंपरा में जकड़ी अपने जीवन को व्यावहारिक बनाने के लिए अपने मन को नए ढाँचे पर स्थापित करने लगी। भावुकता को छोड़कर विवेक ग्रहण करती है। नारी की परंपरागत सामर्थ्य हीनता को अनुकरणीय रूप में तोड़ती है।"[9]

'भया कबीर उदास' उपन्यास की यमन (लिली) पाण्डेय एक नामी विश्वविद्यालय के कुलपति की इकलौती संतान थी। उसके पिता नहीं चाहते थे कि लिली अपना कैरियर बनाने से पहले विवाह के बंधन में उलझ जाये। इसलिए वो विवाह का विरोध करते हैं और एम.ए. के पश्चात्त पीएच.डी. करने के लिए लिली को अमरीका भेज देते हैं। अमेरिका में पीएच.डी. के साथ-साथ लिली एक प्रख्यात कॉलेज में प्राचीन इतिहास और भारतीय सभ्यता पढ़ाने का कार्य भी करती थी। विदेशी भूमि पर अकेली रहकर लिली अपने शोधकार्य के साथ-साथ नौकरी भी करती है। एक सुखी संपन्न परिवार में जन्म लेने के बाद भी लिली अपने माता-पिता पर निर्भर न होकर पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर होकर आधुनिक नारी होने का प्रमाण देती है।

निष्कर्ष :

उषा प्रियम्वदा की नायिकाएँ परंपरागत स्त्री-जीवन को छोडकर आधुनिक जीवन शैली अपनाती है। उषा जी के उच्चशिक्षित नारी पात्र कैरियर के निर्माण हेतु संघर्ष करता है और सफलता भी अर्जित करते हैं। उषा जी ने अपने उपन्यासों में नारी की व्यक्तिगत तथा परिवेशगत, मानसिक एवं शारीरिक समस्याओं को व्यापक अभिव्यक्ति देकर युगों से उपेक्षित नारी के अस्तित्व उभरने का प्रामाणिक प्रयत्न किया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में यह सर्वथा नई चेतना का प्रमाण है।

महिला कथाकारों की एक विशेषता यह है कि इन्होंने नारी स्वरूपों का जो अंकन किया उसमें नारी के सौंदर्य को चित्रित न करते हुए नारी के शक्ति, दु:ख, वात्सल्य, वीरता, हठयोगिनी, वीरांगना, करुणा एवं 'माता' जो सदेव दूसरों को समर्पित करनेवाले रूप को चित्रित किया है।

"हम भारत की नारी है, फूल कहीं चिंगारी है,
हर पुरुष को शक्ति देने वाली नारी है ।"[10]

संदर्भ संकेत :

1. श्रीमद भागवत महापुराण : कोड - 26, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ. 42
2. सिंह, डॉ.साधना, नई कहानी में आधुनिकता बोध, पुस्तक संस्थान, कानपुर, प्रथम संस्करण-1978, पृ.127
3. प्रियम्वदा, डॉ.उषा, रूकोगी नहीं राधिका, पुस्तक संस्थान, कानपुर, तीसरा संस्करण-2019, पृ.87
4. प्रियम्वदा, डॉ.उषा, सम्पूर्ण कहानियाँ,भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006, पृ.17
5. प्रियम्वदा, डॉ.उषा, अंतर्वशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण-2023, पृ.143
6. वही, पृ.125
7. यादव, डॉ.उषा, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1999, पृ.77
8. रजवार, डॉ.शीला, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ, इस्टर्न बुक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009, पृ. 127
9. प्रियम्वदा, डॉ.उषा, शेषयात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006, पृ.84
10. पाण्डेय, मृदुला, नारी अतीत से वर्तमान तक, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2017, पृ.241